15 MONDAY SEPTEMBER

द्वितीय सेमेस्टर

कुमार [illegible]

आकर चारि लाख चौरासी। जाति जीव जल थल नभ बासी॥
सीय राममय सब जग जानी। करउँ प्रनाम जोरि जुग पानी॥
[illegible] तुलसीदास जी [illegible] बतलाते जा रहे हैं कि [illegible] चौरासी लाख योनियों [illegible] जलचर, थलचर, नभचर [illegible] चाहे जलचर, थलचर हो या नभचर हो, सबको मैं हाथ जोड़कर, [illegible] इन सभी को [illegible] बार बार प्रणाम करता हूँ।

जानि कृपाकर किंकर मोहू। सब मिलि करहु छाड़ि छल छोहू॥
निज बुधि बल भरोस मोहि नाहीं। तातें बिनय करउँ सब पाहीं॥
यहाँ गोस्वामी जी कहते हैं कि हे प्रभु [illegible] स्वामी हैं, मेरे ऊपर कृपा करने में किसी भी प्रकार की कमी नहीं करें। वे कहते हैं कि उन्हें अपने बल बुद्धि पर कोई भरोसा नहीं है, वे अपने को एक [illegible] समझते हैं और बार-बार निज कल्याण की कामना करते हैं विनती करते हैं।

करन चहउँ रघुपति गुन गाहा। लघु मति मोरि चरित अवगाहा॥
सूझ न एकउ अंग उपाऊ। मन मति रंक मनोरथ राऊ॥
यहाँ गोस्वामी जी कहते हैं कि वे श्री राम के गुणों की गाथा गाना चाहते हैं, वे अपनी बुद्धि को अत्यंत थोड़ा एवं सीमित समझते हैं, जबकि श्री राम का चरित्र अथाह है, इसको वर्णन करने की क्षमता मुझमें नहीं है, मुझको कोई उपाय

2014

नहीं सूझ रहा कि कैसे यह कार्य पूरा करें। [illegible]

प्रभु और प्रीति से कहाँ आत ~~[illegible]~~ है मनोरथ पूर्ण करने वाले भगवान मेरा [illegible] है।

मति अति नीच ऊँचि रुचि आछी। चहिअ अमिअ जग जुरइ न छाछी॥
छमिहहिं सज्जन मोरि ढिठाई। सुनिहहिं बालबचन मन लाई॥

व्याख्या- यहाँ गोस्वामी जी अपने को अत्यंत नीच कहते हैं और अपनी रुचि को अत्यंत ऊँचा रखने वाला अपने को बताते हैं। बड़ी विनम्रता से कहते हैं कि चाहत तो अमृत पाने की है, पर मिलता छाछ भी नहीं है, प्रभु से बार बार प्रार्थना करते हैं कि मेरी ढिठाई को क्षमा करेंगे, और मेरे बाल वचनों का मन लगाकर तथा कृपा कर प्रेमपूर्वक सुनेंगे। यह बार बार प्रार्थना है। तुलसीदास की यह विनम्रता उनकी महानता का द्योतक है।

जौं बालक कह तोतरि बाता। सुनहिं मुदित मन पितु अरु माता॥
हँसिहहिं कूर कुटिल कुबिचारी। जे पर दूषन भूषनधारी॥

व्याख्या- यहाँ भी गोस्वामी जी उसी तरह बात करते हैं और कहते हैं कि जिस तरह किसी बालक की तोतली बोली सुनकर उनके माता पिता बड़ी प्रसन्नता से सुनते हैं और आनन्द विभोर हो जाते हैं। ऐसी अवस्था में जो क्रूर, कुटिल स्वभाव वाले होते हैं वे हँसी उड़ाते हैं क्योंकि उनका काम ही होता है दूसरे दोषों को उभारना अपना का भूषण समझते हैं।

निज कबित्त केहि लाग न नीका। सरस होउ अथवा अति फीका॥
जे पर भनिति सुनत हरषाहीं। ते बर पुरुष बहुत जग नाहीं॥

यहाँ कवि कहते हैं कि अपनी रचना या कविता तो सबको अच्छी और रसीली लगती है चाहे वह रचना सरस हो अथवा नीरस बेकार, परन्तु दूसरों की रचना सुनकर जो आनन्दित होते हैं, और बड़ाई करते हैं ऐसे उत्तम पुरुष समाज में बहुत कम, थोड़े भी नहीं होते हैं।

॥३॥

जगबहु नरसर सरि सम भाई। जे निज बाढ़ि बढ़हिं जल पाई॥
सज्जन सुकृत सिंधु सम कोई। देखि पूर बिधु बाढ़ई जोई॥

तुलसी दास जी यहां कहते कि इस संसार में नदियों और तालाबों के सदृश ही अधिक मनुष्य होते हैं जो अपनी ही बाढ़ से, अपनी ही उन्नति से प्रसन्न होते हैं और इतराते हैं परंतु समुद्र का विशाल हृदय सज्जन पुरुष बहुत कम होते हैं जो चन्द्रमा को पूर्ण देखकर उमड़ पड़ता है प्रसन्न होता है। यहां भी गोस्वामी जी आदर्श और कुटिल विचार वालों की ही चर्चा करते हैं।

भाग छोट अभिलाषु बड़ करउँ एक बिस्वास।
पैहहिं सुख सुनि सुजन सब, खल करिहहिं उपहास॥8॥

विद्यार्थियों यहां तुलसी दास जी कहते हैं कि मेरा भाग्य थोड़ा है परन्तु इच्छा बहुत बड़ी है ऐसी स्थिति में उन्हें विश्वास है कि इस बात को जानकर मात्र सज्जन पुरुष आनन्दित होंगे, सुख पाएंगे, जो कुटिल स्वभाव के होंगे वो भला कब खुश होने वाले हैं, वे तो हंसी ही उड़ाएंगे, ठिठोली ही करेंगे।

खल परिहास होइ हित मोरा। काक कहहिं कलकंठ कठोरा॥
हंसहि बक दादुर चातकही। हंसहि मलिन खल बिमल बतकही॥

विद्यार्थियों यहां तुलसीदास जी कहते हैं कि हमारे सम्बन्ध में उल्टी प्रतिक्रिया होती है क्योंकि जब कुटिल लोग हंसी

[illegible] देखते हैं, परिहास करते हैं तथा मेरा मूल्यांकन नहीं होता
मेरा बिल्कुल ही होता है। प्रकृति से प्रतिकूल देखकर कहते हैं
[illegible] करने वाले गायक कोयल की मधुर वाणी की
हँसी उड़ाते हैं। दूसरा और तीसरा उदाहरण देते हुए कहते
हैं कि बगुले हंस की हँसी उड़ाते हैं, मेंढक पपीहे को देखकर
हँसते हैं ठीक उसी तरह मलिन मन वाले जन, दुष्ट लोग
[illegible] कवियों की मधुर वाणी का मज़ाक उड़ाते हैं।

भगत रसिक न राम पद नेहू। तिन्ह कहँ सुखद हास रस एहू॥
भाषा भनिति भोरि मति मोरी। हँसिबे जोग हँसें नहिं खोरी॥
यहाँ श्री गोस्वामी जी कविता विरोधी लोगों की चर्चा
करते हैं और कहते हैं कि जो जन काव्य रसिकता से हीन लोग
हैं श्रीराम के चरणों में प्रेम नहीं है उन्हें तो कविता को
देखकर हँसी ही आती है। वे अपनी सरलता, अकुशलता की चर्चा
करते हुए कहते हैं कि मेरी मति अत्यंत भोली है
और मेरी रचना भी संस्कृत गर्वित न होकर देसी भाषा में
रचित है शायद इसलिए वे सभी हँसी उड़ा रहे हैं
शायद उनका कोई दोष ही नहीं है। यह एक अद्भुत
विनम्रता तुलसी दास जी की है।

प्रभु पद प्रीति न सामुझि नीकी। तिन्हहि कथा सुनि लागिहि फीकी॥
हरि हर पद रति मति न कुतर की। तिन्ह कहँ मधुर कथा रघुबर की॥
विचारियों में यहाँ गोस्वामी जी कहते हैं कि जो सामान्य
14
[illegible] वे ही प्रभु के चरणों में प्रेम नहीं रखते हैं, उन्हें राम[illegible]

सत्संग भी फीकी लगती है, इसके विपरीत जिनकी मति
सही है, नहीं भगवान विष्णु और देवस्वरूप शिव के
चरणों में प्रेम रखते हैं, उनकी कुतर्क वाली बुद्धि भी
नहीं होती है। वो सज्जन हरि-हर में कोई भेदभाव
करते हैं, किसी को ऊँचा या नीचा नहीं समझते हैं म
उन्हें ही रघुवर की कथा अच्छी लगती है जो
ऐसे जन ही सत्संगति करते हैं, क्यों उनके लिए
इससे मीठी कथा और नहीं लगती है।

राम भगति भूषित जिअँ जानी। सुनिहहिं सुजन सराहि सुबानी।
कबि न होउँ नहिं बचन प्रबीनू। सकल कला सब बिद्या हीनू॥

यहाँ गोस्वामी जी कहते हैं जो सज्जन पुरुष रामभक्ति से
पूर्ण होते हैं, सुन्दर वाणी से प्रभु की सराहना करते हुए
सुनते हैं। यहाँ भी अपनी विनम्रता दर्शाते हुए कहते
वे न तो वाक्य रचना में कुशलता रखते हैं, वे तो
सभी कलाओं और विद्याओं से अपने को रा
मानते हैं।

आखर अरथ अलंकृति नाना। छंद प्रबंध अनेक बिधाना।
भाव भेद रस भेद अपारा। कबित दोष गुन बिबिध प्रकारा।
कबित बिबेक एक नहिं मोरें। सत्य कहउँ लिखि कागद कोरें।

विद्यार्थीयों यहाँ गोस्वामी जी कहते हैं, जानते हैं
काव्य रचना में अनंत आकार होते हैं, अनेक अ
2014 छन्द तथा विधान होते हैं, बहुत से भाव, रस का
गुण और दोष होते हैं परंतु इनमें से किसी बात का

[illegible] नहीं है। मैं [illegible]
[illegible] लिखकर कोरे कागज पर [illegible]
[illegible] हूँ। [illegible]
[illegible]
भनिति मोरि सब गुन रहित, बिस्व बिदित गुन एक।
सो बिचारि सुनिहहिं सुमति, जिन्ह के बिमल बिबेक॥९॥
और तुलसी जी कहते हैं कि मेरी रचना सभी गुणों से रहित है लेकिन वे कहते हैं कि उनकी रचना में जगत प्रसिद्ध एक ही गुण है। वह है राम का नाम। यही विचार कर (इस गुण को) बुद्धिमान पुरुष तथा जिनके ज्ञान निर्मल हैं, मेरी वाणी इस रचना और काव्य को सुनने का काम करेंगे।

एहि महँ रघुपति नाम उदारा। अति पावन पुरान श्रुति सारा॥
मंगल भवन अमंगल हारी। उमा सहित जेहि जपत पुरारी॥

कवि यहाँ तुलसीदास यह घोषणा करते हैं कि उनके रामचरित मानस में श्री रघुनाथ रामचन्द्र जी का उदार नाम वर्णित है क्योंकि यह अत्यंत पवित्र है और सम्पूर्ण वेद पुराणों, उपनिषदों का सार तत्व है। उनका नाम ऐसा है कि वह मंगल का भवन है और अमंगलों को हरने वाला है। यही वह नाम है जिसे शिव और पार्वती सदा जाप करते हैं, उनको जाप करते हैं।

भनिति बिचित्र सुकबि कृत जोऊ। राम नाम बिनु सोह न सोऊ॥
बिधुबदनी सब भाँति सँवारी। सोह न बसन बिना बर नारी॥

कवि यहाँ कहते हैं कि किसी भी अच्छे कवि की अद्भुत कविता भी श्री राम के नाम के बिना शोभायमान नहीं होता है।

यहाँ कवि उपमा अलंकार का प्रयोग करते हुए कहते हैं कि
जैसे चन्द्रमा के समान मुख वाली नारी सुन्दर होकर भी
बिना वस्त्र के शोभा नहीं पाती है, सुन्दर नहीं लगती
है।

सब गुन रहित कुकबि कृत बानी। राम नाम जस अंकित जानी॥
सादर कहहिं सुनहिं बुध ताही। मधुकर सरिस संत गुनग्राही॥
ऊपर की कविता को आगे बढ़ाते हुए कवि कहते हैं कि
सब गुण रहित कविता भी रामनाम और उनके यश
गान के कारण सबके सामने आदर पाता है। उस
गुण रहित कविता को आदर पूर्वक वाचन करते हैं और
संतजन भौंरे की भाँति सार तत्व का ग्रहण करने
वाले होते हैं वे भी इसे सुनते, गुनते और वाचन
करते हैं।

जदपि कबित रस एकउ नाहीं। राम प्रताप प्रगट एहि माहीं॥
सोइ भरोस मोरें मन आवा। केहिं न सुसंग बड़प्पनु पावा॥
गोस्वामी जी कहते हैं कि यद्यपि कविता का एक भी
गुण इसमें नहीं है परंतु श्रीराम का अलौकिक प्रताप
स्पष्ट रूप से प्रकट है। मेरे मन में यही एक भरोसा
भले का संग सदा बड़ाई पाता है।

धूमउ तजइ सहज करुआई। अगरु प्रसंग सुगंध बसाई॥
भनिति भदेस बस्तु भलि बरनी। राम कथा जग मंगल करनी॥
यहाँ बताते हैं कि काला धुआँ भी अगर की
संगति पाकर सुगंधित होती है और अपना कड़वापन
छोड़ देता है, वैसे ही मेरी कविता भले ही भद्दी है
परंतु रामकथा होने के कारण सर्वग्राह्य हो गया